1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये।

अथर्ववेद 613/3

सब सुखों के दाता परमेश्वर! जगत निर्माता प्रभो!
हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें।

वर्ष 39, अंक 38 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 जुलाई, 2016 से रविवार 31 जुलाई, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

धर्म और मजहब में अंतर क्या हैं?

– डॉ. विवेक आर्य

प्रायः अपने आपको प्रगतिशील कहने वाले लोग धर्म और मजहब को एक ही समझते हैं। मजहब अथवा मत-मतान्तर अथवा पंथ के अनेक अर्थ हैं जैसे वह रास्ता जो स्वर्ग और ईश्वर प्राप्ति का है और जो मजहब के प्रवर्तक ने बताया है। अनेक जगहों पर ईमान अर्थात् विश्वास के अर्थों में भी आता है।

1. धर्म और मजहब समान अर्थ नहीं है और न ही धर्म ईमान या विश्वास का पर्याय है।

2. धर्म क्रियात्मक वस्तु है मजहब विश्वासात्मक वस्तु है।

3. धर्म मनुष्य के स्वाभाव के अनुकूल अथवा मानवी प्रकृति का होने के कारण स्वाभाविक है और उसका आधार ईश्वरीय अथवा सृष्टि नियम है। परन्तु मजहब मनुष्यकृत होने से अप्राकृतिक अथवा अस्वाभाविक हैं। मजहबों का अनेक व भिन्न-भिन्न होना तथा परस्पर विरोधी होना उनके मनुष्यकृत अथवा बनावटी होने का प्रमाण है।

4. धर्म के जो लक्षण मनु महाराज ने बतलाये हैं वह सभी मानव जाति के लिए एक समान है और कोई भी सभ्य मनुष्य उसका विरोधी नहीं हो सकता। मजहब अनेक हैं और केवल उसी मजहब को मानने वालों द्वारा ही स्वीकार होते हैं। इसलिए वह सार्वजानिक और सार्वभौमिक नहीं है। कुछ बातें सभी मजहबों में धर्म के अंश के रूप में हैं इसलिए उन मजहबों का कुछ मान बना हुआ है।

5. धर्म सदाचार रूप है। अतः धर्मात्मा होने के लिये सदाचारी होना अनिवार्य है। परन्तु मजहबी अथवा पंथी होने के लिए सदाचारी होना अनिवार्य नहीं है। अर्थात् जिस तरह धर्म के साथ सदाचार का नित्य सम्बन्ध है उसी तरह मजहब के साथ सदाचार का कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि किसी भी मजहब का अनुयायी न होने पर भी कोई भी व्यक्ति धर्मात्मा (सदाचारी) बन सकता है। परन्तु आचार सम्पन्न होने पर कोई भी मनुष्य उस वक्त तक मजहबी अथवा पन्थाई नहीं बन सकता जब तक उस मजहब के मंतव्यों पर ईमान अथवा विश्वास नहीं लाता। जैसे कि कोई कितना ही सच्चा ईश्वर उपासक और उच्च कोटि का सदाचारी क्यों न हो वह जब तक हजरत ईसा और बाइबिल अथवा हजरत मोहम्मद और कुरान शरीफ पर ईमान नहीं लाता तब तक ईसाई अथवा मुस्लमान नहीं बन सकता।

6. धर्म ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है अथवा धर्म अर्थात् धार्मिक गुणों और कर्मों के धारण करने से ही मनुष्य मनुष्यत्व को प्राप्त करके मनुष्य कहलाने का अधिकारी बनता है। दूसरे शब्दों में धर्म और मनुष्यत्व पर्याय हैं क्योंकि धर्म को धारण करना ही मनुष्यत्व है। कहा भी गया है-

खाना,पीना,सोना,संतान उत्पन्न करना जैसे कर्म मनुष्यों और पशुओं के एक समान हैं। केवल धर्म ही मनुष्यों में विशेष हैं जोकि मनुष्य को मनुष्य बनाता है।

धर्म से हीन मनुष्य पशु के समान है। परन्तु मजहब मनुष्य को केवल पन्थाई या मजहबी और अन्धविश्वासी बनाता है। दूसरे शब्दों में मजहब अथवा पंथ पर ईमान से मनुष्य उस मजहब का अनुयायी अथवा ईसाई अथवा मुस्लमान बनता है।

7. धर्म मनुष्य को ईश्वर से सीधा सम्बन्ध जोड़ता है और मोक्ष प्राप्ति निमित्त धर्मात्मा अथवा सदाचारी बनना अनिवार्य बतलाता है परन्तु मजहब मुक्ति के लिए व्यक्ति को पन्थाई अथवा मजहबी बनना अनिवार्य बतलाता है और मुक्ति के लिए सदाचार से ज्यादा आवश्यक उस मजहब की मान्यताओं का पालन बतलाता है।

जैसे अल्लाह और मुहम्मद साहिब को उनके अंतिम पैगम्बर मानने वाले जन्नत जायेंगे चाहे वे कितने भी व्यभिचारी अथवा पापी हों जबकि गैर मुसलमान चाहे कितना भी धर्मात्मा अथवा सदाचारी क्यों न हो वह दोजख अर्थात् नर्क की आग में अवश्य जलेगा क्योंकि वह कुरान के ईश्वर अल्लाह और रसूल पर अपना विश्वास नहीं लाया है।

....मजहब मुक्ति के लिए व्यक्ति को पन्थाई अथवा मजहबी बनना अनिवार्य बतलाता है और मुक्ति के लिए सदाचार से ज्यादा आवश्यक उस मजहब की मान्यताओं का पालन बतलाता है। जैसे अल्लाह और मुहम्मद साहिब को उनके अंतिम पैगम्बर मानने वाले जन्नत जायेंगे चाहे वे कितने भी व्यभिचारी अथवा पापी हों जबकि गैर मुसलमान चाहे कितना भी धर्मात्मा अथवा सदाचारी क्यों न हो वह दोजख अर्थात् नर्क की आग में अवश्य जलेगा क्योंकि वह कुरान के ईश्वर अल्लाह और रसूल पर अपना विश्वास नहीं लाया है।...

8. धर्म में बाहर के चिह्नों का कोई स्थान नहीं है क्योंकि धर्म लिंगात्मक नहीं हैं- न लिंगम धर्मकारणं अर्थात् लिंग (बाहरी चिह्न) धर्म का कारण नहीं है। परन्तु मजहब के लिए बाहरी चिह्नों का रखना अनिवार्य है जैसे एक मुसलमान के लिए जालीदार टोपी और दाढ़ी रखना अनिवार्य है।

9. धर्म मनुष्य को पुरुषार्थी बनाता है क्योंकि वह ज्ञानपूर्वक सत्य आचरण से ही अभ्युदय और मोक्ष प्राप्ति की शिक्षा देता है परन्तु मजहब मनुष्य को आलस्य का पाठ सिखाता है क्योंकि मजहब के मंतव्यों मात्र को मानने भर से ही मुक्ति का होना उसमें सिखाया जाता है।

10. धर्म मनुष्य को ईश्वर से सीधा सम्बन्ध जोड़कर मनुष्य को स्वतंत्र और आत्म स्वाबलंबी बनाता है क्योंकि वह ईश्वर और मनुष्य के बीच में किसी भी मध्यस्थ या एजेंट की आवश्यकता नहीं बताता। परन्तु मजहब मनुष्य को परतंत्र और दूसरों पर आश्रित बनाता है क्योंकि वह मजहब के प्रवर्तक की सिफारिश के बिना मुक्ति का मिलना नहीं मानता।

11. धर्म दूसरों के हितों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति तक देना सिखाता है जबकि मजहब अपने हित के लिए अन्य मनुष्यों और पशुओं के प्राण हरने के लिए हिंसारूपी कुरबानी का सन्देश देता है।

12. धर्म मनुष्य को सभी प्राणी मात्र से प्रेम करना सिखाता है, जबकि मजहब मनुष्य को प्राणियों का माँसाहार और दूसरे मजहब वालों से द्वेष सिखाता है।

13. धर्म मनुष्य जाति को मनुष्यत्व के नाते से एक प्रकार के सार्वजनिक आचारों और विचारों द्वारा एक केंद्र पर केन्द्रित करके भेदभाव और विरोध को मिटाता है तथा एकता का पाठ पढ़ाता है परन्तु मजहब अपने भिन्न-भिन्न मंतव्यों और कर्त्तव्यों के कारण अपने पृथक-पृथक जत्थे बनाकर भेदभाव और विरोध को बढ़ाते और एकता को मिटाते हैं।

14. धर्म एक मात्र ईश्वर की पूजा बतलाता है जबकि मजहब ईश्वर से भिन्न मत प्रवर्तक/गुरु/मनुष्य आदि की पूजा बतलाकर अन्धविश्वास फैलाते हैं।

धर्म और मजहब के अंतर को ठीक प्रकार से समझ लेने पर मनुष्य अपने चिंतन मनन से आसानी से यह स्वीकार करके श्रेष्ठ कल्याणकारी कार्यों को करने में पुरुषार्थ करना धर्म कहलाता है इसलिए उसके पालन में सभी का कल्याण है। ❑

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के अन्तर्गत रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल में

अन्तर्विद्यालयी चित्रकला प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता मंगलवार 12 जुलाई 2016 को अध्यक्ष श्री अरुण प्रकाश वर्मा, प्रबन्धक श्री संजय कुमार, प्रधानाचार्या श्रीमती किरण तलवार एवं श्रीमती तृप्ता शर्मा जी की देखरेख में सुचारु रूप में सम्पन्न हुई। इसमें नर्सरी से लेकर कक्षा 12वीं तक के लगभग 200 बच्चों ने भाग लिया।

पांचों वर्गों में क्रमश: 'ओइम्, 'ओइम् ध्वज में रंग भरना', 'पर्यावरण' व 'जल

– शेष पृष्ठ 4 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में केन्द्रीय आर्य समाज नेपाल के सहयोग से

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन काठमाण्डू (नेपाल) : 20-21-22 अक्टूबर 2016

सम्पूर्ण यात्रा विवरण पष्ठ 5 पर एवं आवेदन प्रपत्र पृष्ठ 7 पर प्रकाशित किया गया है

सम्पादकीय

सेना के जवान किसके हैं?

अभिव्यक्ति की आजादी का पंखा झलते हुए जाकिर नाईक के भाषणों के प्रभाव से ढाका में इस्लामी आतंक के शोलों को कैसे हवा मिली, यह हम सबने देखा था, पिछले दिनों जे.एन.यू. से चली अफजल गेंग की आजादी की मुहीम से अब देश के लोगों ने कश्मीर के अन्दर भी देख लिया। पर सवाल यह है कि देश के विश्वविद्यालयों और सत्ता सदनों के भीतर आजादी के इस दुरुपयोग को हम कब तक देखते रहेंगे? कश्मीरी अवाम घायल है यह कहकर दु:ख मनाने वाले अक्सर उस समय मूक दिखाई देते हैं जब भारतीय सेना के जवान अपने खून से धरती माँ का सीना सींचकर अपने प्राण मात्रभूमि के चरणों में अर्पित करते हैं। जिन लोगों को कश्मीर में मासूम पत्थर फेंकने वालों के घायल होने का दु:ख सता रहा है उनके लिए कुछ आंकड़े जारी हुए हैं। घाटी में हिंसा में अब तक कुल 3100 लोग घायल हुए हैं। इनमें से लगभग 1500 भारतीय सेना के जवान हैं। जो कथित तौर पर कश्मीरियों द्वारा पत्थर फेंकने से घायल हुए हैं। हालाँकि सेना पर पत्थर केवल कश्मीर में ही नहीं फेंके जा रहे है दिल्ली आकर देख लीजिये किस तरह संसद में नेताओं के द्वारा और न्यूज रूम से मीडिया द्वारा सेना के जवानों पर आरोप के पत्थर बरस रहे हैं? कश्मीर में मासूम लोगों की सेना द्वारा निर्मम हत्या। कांग्रेस के नेता गुलाम नबी आजाद ने इस मुद्दे को पूरे जोर शोर से संसद के पटल पर रखा। हालाँकि मैं यहाँ एक बात स्पष्ट कर दूँ हमारा राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है, किन्तु राष्ट्र की रक्षा कर रहे सेना के जवानों की पीड़ा उन पर लग रहे बेबुनियाद आरोपों को देखकर यह मुद्दा हमारे लिए प्रासंगिक हो गया है।

एक माँ का बेटा पढ़ लिखकर समाचार वाचक बन गया, एक माँ का बेटा नेता बन गया, और एक माँ ने अपना बेटा देश की सरहद की रक्षा के लिए भेज दिया कि जा बेटा सीमा पर सीना तानकर खड़ा हो जा। आज वो बेटा इन दोनों बेटों की रक्षा के लिए सामने से दुश्मन की गोली और पीठ पीछे अपनों से पत्थर खा रहा है। अब ये सोचने वाली बात है कि सेना की ज्यादती की बात करने वाले पत्रकार और नेता इस पर कुछ क्यों नहीं बोलते हैं? क्या सेना के जवानों का मानवाधिकार नहीं होता है। क्या उनको लगी चोट दर्द नहीं देती है? उनकी मां नहीं होती या परिवार नहीं होता? आखिर किसके लिए सेना के जवान अपनी माताओं को अपनी पत्नी-बच्चों को छोड़कर लोगों के पत्थर, दुश्मनों की गोली, नेताओं और मीडिया की बोली सहन करते हैं? इस बात की चर्चा तो खूब होती है कि सेना की पेलेट गनों से प्रदर्शनकारियों की आंखों को गंभीर चोटें लगी हैं। लेकिन सेना के लगभग 1500 जवानों की चोट पर कोई चर्चा क्यों नहीं होती है। समाज के कुछ तबकों से आवाज उठ रही है कि कश्मीर में सेना ज्यादती कर रही है। इन्हें ज्यादती तो दिख गयी क्या इन्हें ये नहीं दिखाई दे रहा है कि सेना पर पत्थर बरसाए जा रहे हैं। भारत के ही एक राज्य में भारतीय सेना को घायल किया जा रहा है।

बुरहान वानी के एन्काउंटर से दुखी जमात-उद-दावा ने पाकिस्तान में आजादी का कारवां निकाला। जिसमें ज्यादातर आतंकी संगठन के लोग ही शामिल हुए थे। इस्लामाबाद के डी. चौक से इस कारवां को निकाला गया था। जिसके बाद हाफिज सईद और अब्दुल रहमान मक्की जैसे आतंकियों ने भारत के खिलाफ जमकर आग उगली। इन आतंकियों ने ये भी धमकी दी है कि वो बुरहान की मौत को जाया नहीं जाने देंगे। हालाँकि इसमें सारा दोष अकेले पाकिस्तान को देकर पल्ला झाड़ लेना काफी नहीं होगा क्योंकि ऐसी समर्थन की आवाजें भारत में कविता कृष्णन जैसी वामपंथी नेता समेत कई लोग उठा रहे हैं। लेकिन कभी कोई एक आवाज उन लोगों के खिलाफ नहीं उठी जो हर रोज वहां सेना के दस्तों पर हमला करते हैं। हर सप्ताह जुमे की नमाज के बाद पाकिस्तान और कुख्यात आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट के झंडे लहराये जाते हैं। सेना पर पत्थर फैंकने की घटना तो अब आम बात है, लेकिन युवा प्रदर्शनकारी खुलेआम देशी पेट्रोल बम फेंक रहे हैं। गंभीर बात तो यह है कि प्रदर्शनकारियों में महिलाएं और छोटे बच्चे भी शामिल हैं। पिछले कुछ दिनों की घटनाओं के वीडियो न्यूज चैनलों और सोशल मीडिया पर चले हैं। इन वीडियो को देखने से यह जाहिर होता है कि पेट्रोल बम फेंकने वालों के सामने सेना के जवान भी मजबूर हैं। इधर सेना के जवान बम फेंकने वालों पर कोई सख्त कार्यवाही नहीं कर रहे तो कश्मीर पुलिस के जवान जवाब में पत्थरबाजी करने को ही मजबूर हैं।

भारत में हिज्बुल मुजाहिदीन के आतंकी कमांडर की मौत पर शोक के स्वर कुछ ऐसे स्थानों से उठे जहां इनके लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। एक आतंकी को सही और उसके खात्मे को गलत बताने के संकेत करते लोगों को आप क्या कहेंगे? हाल में जेएनयू की नई पौध का विष वृक्ष उमर खालिद और जम्मू-कश्मीर में सत्ता खोने से आहत उमर अब्दुल्ला की बातों को किस तरह लिया जाए? क्या किसी विश्वविद्यालय के पहचान पत्र देश को नुकसान पहुंचाने वालों की ढाल बन सकते हैं? क्या राजनीति में हाशिए पर जाने का मतलब आतंकियों का दर्दमंद हो जाना और देश की अखंडता को चुनौती देने वालों के साथ खड़े दिखना है? वानी की मौत के बाद सवाल उठाने वाले बुद्धिजीवियों को यह बताना चाहिए कि गोलियां बरसाते, बारूद बिछाते आतंकी और उनके दिहाड़ी पत्थरबाजों से आप कैसे निपटेंगे? सबसे बड़ा सवाल यह है कि एक आतंकी की मौत पर भारत में बहस छेड़ने और घाटी का उफान बैठाने की बजाय वहां लोगों को भड़काने की चिनगारियां बिखेरते इन बुद्धिजीवियों और आतंकवाद को मानवाधिकार से जोड़ते पाकिस्तानी पैरोकारों के बीच फर्क क्या है?

बुरहान वानी सरीखे आतंकियों की मौत को भुनाने की पाकिस्तानी तरकीबों से कैसे निबटना है यह भारत जानता है। इन गद्दारों से हमारी सेना को निपटना आता है लेकिन असली चुनौती घर में बैठे आतंकियों से है?

सम्पादक

वेद-स्वाध्याय

कहाँ जाएँ

वय: सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमाना:।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्।। ऋग्वेद 10/73/11
ऋषि: **गौरिवीति:।।** देवता - **इन्द्र:।।** छन्द: **निचृत्त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ- वे **सुपर्णा:** = शोभनपतन शील **वय:**= पक्षी **प्रियमेधा:** = जिन्हें मेध (संगमन) प्रिय है और **ऋषय:**=जो ज्ञान लाने वाले हैं **इन्द्रम्**= इन्द्र के पास **नाधमाना:**= यह प्रार्थना करते हुए **उपसेदु:**=आ बैठे हैं कि "**ध्वान्तम्**=हमारे अन्धकार का **अप ऊर्णुहि**= निवारण कर दो; **चक्षु: पूर्धि**= हमारी आँखे भर दो या हमें आँखें दे दो और हम जो **निधया इव**= मानो पाशों। से **बद्धान्**= बँधे पड़े हैं **अस्मान्**= हमें **मुमुग्धि**= छुड़ा दो।"

विनय - हमारे शरीर में पाँच इन्द्रियाँ रहती हैं। ये पक्षियों की तरह बाहर उड़ती-फिरती हैं। ये ऋषि-इन्द्रियाँ हैं, ज्ञान लाने वाली ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। इन्हें अपने रूप-रसादि विषयों से संगमन करना बड़ा प्रिय है। इनका उड़ना (पतन करना) बड़ा सुन्दर है। बाहर से बड़े सुन्दर-सुन्दर रूपों को, रसों को, गन्धों को ये कैसी विलक्षणता से ले-आती है! इनमें क्या ही अद्भुत गुण है। आँख खोलो, तो सब विविध जगत् दीखने लगता है, आँख बन्द करने पर कुछ नहीं। आँख में क्या विलक्षण शक्ति है। इसी प्रकार कान को देखो, जीभ को देखो, इनमें क्या विचित्र जादू है कि वे हमारे लिए बड़ी ही आनन्ददायक अनुभूतियों को उत्पन्न करती हैं।

परन्तु एक समय आता है जब ये इतनी अद्भुत इन्द्रियाँ हमारी ज्ञानपिपासा को तृप्त नहीं कर सकतीं। ये बाहर से जो प्रकाश लाती हैं वह सब तुच्छ लगने लगता है। यह तब होता है जब छठी इन्द्रिय (मन) द्वारा अन्दर के प्रकाश की ओर हमारा ध्यान जाता है, प्रत्याहार शुरू होता है और इन्द्रियों का उड़ना बन्द हो जाता है। सब इन्द्रियाँ मन के प्रकाश के मुकाबले में बैठकर अपने अन्धकार को और अपनी परिमितता के बन्धन को अनुभव करती हैं। ओह! इन्द्रियाँ कितना थोड़ा ज्ञान दे सकती हैं और वह ज्ञान भी कितना बँधा हुआ है। अन्दर-बाहर की थोड़ी-सी बाधा से उनका ज्ञान-ग्रहण रुक जाता है। आँख अतिदूर, अतिसमीप नहीं देख सकती, अतिसूक्ष्म को नहीं देख सकती, ओट में पार नहीं देख सकती। यह अँधेरा और यह बन्धन तब अनुभव होता है जब मनुष्य को अन्दर के महान्, सब-कुछ जान सकने वाले प्रकाश का पता लगता है। यह इन्द्र का, आत्मा का प्रकाश है। इस प्रकाश-पिपासा से व्याकुल होकर इन्द्रियाँ आत्मा से उस प्रकाश को पाने के लिए गिड़गिड़ाने लगती हैं, प्रार्थना करने लगती हैं कि "हमारे अन्धकार का पर्दा उठा दो, हमारी आँखें प्रकाश से भर दो, हम अन्धे हैं, हमें आँखें दे दो, हम अपने-अपने तनिक-से क्षेत्र में बंधी पड़ी हैं, हमें देशकालाव्यवहित दर्शन की शक्ति दे दो, हमारे बन्धन काट दो, हम जिस देश और जिस काल में जिस वस्तु को देखना चाहें तुम्हारे इस प्रकाश में (प्रज्ञालोक में) देख सकें।

इन्द्रियाँ अपने शक्ति-स्रोत इन्द्र की शरण में न जाएँ तो और कहाँ जाएँ?

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

बोध कथा

सिद्ध का मूल्य - केवल चार आने

स्वामी रामतीर्थ जी के जीवन की एक कथा है। लाहौर छोड़ने के पश्चात् मस्ती की दशा में वे ऋषिकेश से आगे गंगा के किनारे घूम रहे थे। एक दिन एक योगी उन्हें मिला। स्वामी रामतीर्थ ने उनसे पूछा-"बाबा! कितने वर्ष से आप संन्यासी हैं?"

योगी ने कहा-"कोई चालीस वर्ष हो गये।"

स्वामी रामतीर्थ बोले-"इतने वर्षों में आपने क्या-कुछ प्राप्त किया है?"

योगी ने बड़े अभिमान से कहा-"इस गंगा को देखते हो? मैं चाहूं तो इसके पानी पर उसी प्रकार चलकर दूसरे पार जा सकता हूं, जैसे कोई शुष्क भूमि पर चलता है।"

स्वामी रामतीर्थ ने कहा- "उस पार से वापस भी आ सकते हैं आप?"

योगी ने कहा-"हां! वापस भी आ सकता हूं।"

स्वामी रामतीर्थ बोले-"इसके अतिरिक्त कुछ और?"

योगी ने कहा-"यह क्या छोटी बात है?"

स्वामी रामतीर्थ ने हंसते हुए कहा-"बहुत छोटी-सी बात है बाबा! चालीस वर्ष आपने खो दिए। नदी में नौका भी चलती है। दो आने उधर जाने के लगते हैं, दो आने इधर आने के। चालीस वर्ष में आपने यह प्राप्त किया, जो केवल चार आने खर्च करके किसी भी व्यक्ति को मिल सकता है। तुम अमृत के सागर में गये अवश्य, परन्तु वहां से मोती के स्थान पर कंकर उठा लाये।"

ये सब-की-सब सिद्धियां ईश्वर-प्राप्ति में विघ्न हैं; प्रभु-दर्शन के मार्ग में रुकावट हैं। केवल सांसारिक सफलता है यह, आत्मा को प्राप्त करने का मार्ग नहीं।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

राजनीति में कौन देवी, कौन दलित?

.....आजादी के 70 साल बाद भी यदि कोई दलित है तो इस बात का कौन जवाब देगा कि वो दलित क्यों है? शायद मायावती उत्तर प्रदेश में चार बार मुख्यमंत्री रह चुकी हैं; जाहिर सी बात है मान-सम्मान के साथ धन सम्पदा की भी कोई कमी नहीं रही होगी लेकिन वो अब भी दलित है तो उनको इस मानसिकता से कैसे उबारा जा सकता है? मुझे नहीं लगता सत्ता या सरकारी योजनाओं की ललक कभी इस मानसिकता से ऊपर किसी दलित को समाज की मुख्यधारा में ला सकेगी कहीं ये चलन तो नहीं बन गया कि दलितों को सभी सरकारी सुविधाओं से नवाजा जाये। उनकी आर्थिक स्थिति ठीक हो जाए बस, कोशिश यह रहे कि वो इस दलित मानसिकता से न उभर पाए? .....

संसद में मानसून सत्र चालू होते ही एक बार फिर बरसाती नदियों की तरह राजनीति अपने उफान पर है। मुद्दों की बारिश झमाझम हो रही है। नेता और उनके समर्थक चालीस डिग्री से ज्यादा तापमान में वातानुकूलित घर और गाड़ियाँ छोड़ सड़कों पर खड़े हैं। कारण एक तो गुजरात में दलित समुदाय के लड़कों की पिटाई और दूसरा बसपा पार्टी अध्यक्ष मायावती पर अभद्र टिप्पणी यह दोनों मुद्दे मीडिया और राजनीति के लिए किसी संजीवनी बूटी से कम नहीं है। मीडिया एक महिला के अपमान पर एक बार फिर चिंतित है जिसे लेकर दलित समुदाय अपनी आन-बान का प्रश्न बना बैठा है। गुजरात के ऊना में कथित गौरक्षा के नाम पर दलितों की पिटाई के बाद वहां दलित समुदाय में भारी रोश है। हालाँकि राज्य सरकार द्वारा सभी आरोपी गिरफ्तार किये जा चुके हैं। पीड़ितों को करीब चार- चार लाख रुपये की सहायता राशि की भी घोषणा कर दी गयी है। दोषी पुलिसकर्मी तत्काल प्रभाव से हटाये जा चुके हैं। लेकिन फिर भी राजनेताओं द्वारा गुजरात बंद के दौरान कुछ जगहों पर हिंसा की घटनाएँ हुई सरकारी सम्पत्ति में आग लगाई गई। जिसमें एक पुलिसकर्मी की मौत हो गयी। ये मुद्दा संसद में भी गूंजा है जिसके बाद कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गाँधी ने पीड़ित परिवार को पांच लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने का ऐलान किया। हालंकि दोनों ही मामले एक सभ्य समाज के लिए निंदा का विषय है। अच्छे समाज के लिए जरूरी है कि राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रों में सुचिता बनी रहे; किन्तु कुछ तर्क खड़े होना भी लाजिमी हैं जब प्रशासन अपना काम कर रहा था दोषी पकड़े गये थे तो क्या सड़क पर उतरकर सरकारी सम्पत्ति आग के हवाले करना, पथराव करना कहां तक जायज है? हम मानते हैं इसमें राजनीति हुई है पर क्या इस तरह सड़क पर न्याय के बहाने हिंसा करना एक लोकतंत्र में स्वस्थ परम्परा का जन्म है? यदि नहीं तो क्या राजनेता जूनागढ़ समेत गुजरात के कई शहरों में दलित समुदाय द्वारा किये इस हिंसक कृत्य की भी निंदा करेंगे?

दूसरा सबसे बड़ा प्रश्न आजादी के 70 साल बाद भी यदि कोई दलित है तो इस बात का कौन जवाब देगा कि वो दलित क्यों है? शायद मायावती उत्तर प्रदेश में चार बार मुख्यमंत्री रह चुकी हैं; जाहिर सी बात है मान-सम्मान के साथ धन सम्पदा की भी कोई कमी नहीं रही होगी लेकिन वो अब भी दलित है तो उनको इस मानसिकता से कैसे उबारा जा सकता है? मुझे नहीं लगता सत्ता या सरकारी योजनाओं की ललक कभी इस मानसिकता से ऊपर किसी दलित को समाज की मुख्यधारा में ला सकेगी कहीं ये चलन तो नहीं बन गया कि दलितों को सभी सरकारी सुविधाओं से नवाजा जाये। उनकी आर्थिक स्थिति ठीक हो जाए बस कोशिश यह रहे कि वो इस दलित मानसिकता से न उभर पाए? पिछले दिनों कांग्रेस नेता शैलजा कुमार ने खुद को दलित बताते हुए अपने साथ मंदिर में अपमान होने की बात कही थी। आज मायावती पर की गयी एक शब्द की अभद्र टिप्पणी को समस्त दलित समुदाय के साथ जोड़ दिया गया, लेकिन जब देश के एक राज्य केरल के अन्दर एक गरीब दलित लड़की के साथ कुछ मुस्लिम युवकों ने रेप कर उसके अंगभंग कर उसकी हत्या कर दी तो राजनीति से कोई भी आवाज उसके लिए बाहर नहीं आई? क्या ये एक दलित की हत्या नहीं थी? या एक दलित महिला का अपमान नहीं था? शायद उसका राजनैतिक कद नहीं था या वहां चुनाव में दलित मुद्दा नहीं थे, या वो गरीब दलित की बेटी मायावती की तरह देवी नहीं थी?

कुछ साल पहले उत्तरप्रदेश में एक नेता ने भारतमाता को डायन कहकर संबोधित किया था। सब जानते हैं भारत माता शब्द राष्ट्र की अस्मिता से जुड़ा है किन्तु तब विरोध का एक स्वर मुझे कहीं सुनाई नहीं दिया। हो सकता है आज हमने राष्ट्र से बड़ी अपनी जाति को मान लिया हो तभी मायावती ने किसी अहम् के बल पर कहा हो कि समाज के लोग मुझे देवी के रूप में देखते हैं, यदि आप उनकी देवी के बारे में कुछ गलत बोलेंगे तो उन्हें बुरा लगेगा और वे मजबूरन विरोध करेंगे। बिल्कुल सत्य कहा एक नारी को देवी ही माना जाना चाहिए और हमारी तो संस्कृति ही यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता: है। दयाशंकर को तत्काल उसके पद प्रभाव से हटाया जाना पार्टी से निष्काशित किया जाना इसी का परिणाम रहा होगा। किन्तु मायावती के समर्थकों द्वारा बीजेपी नेता दयाशंकर की पत्नी और बेटी को लेकर अभद्र टिप्पणी कहाँ तक सही है, उनकी क्या गलती है यही कि वो बस एक मुंहफट नेता की पत्नी है? क्या वो नारी देवी नहीं है? या देवी होने के लिए किसी जाति समुदाय में राजनैतिक कद बड़ा होना जरूरी है?

ऐसा नहीं है महिलाओं पर इस तरह की टिप्पणी हमारे समाज में पहली बार हुई है जिसको लेकर आग लगाई जाये। महाभारत में भी एक प्रसंग में कर्ण द्वारा द्रोपदी पर ऐसी ही टिप्पणी की गयी थी। पिछले कुछ सालों में तो इस तरह के बहुत मामले सामने आये। कांग्रेस नेता नीलमणि सेन डेका ने स्मृति ईरानी पर भद्दी टिप्पणी करते हुए उन्हें मोदी की दूसरी पत्नी बताया था। एक महिला सांसद मीनाक्षी नटराजन को उन्हीं के सहयोगी कांग्रेस नेता ने सौ फीसदी टंच माल कहा था। एक नहीं ऐसे अनेकों उदाहरण मिल जायेंगे। कुछ समय पहले लगता था कि देश अतीत से निकलकर भविष्य की ओर बढ़ेगा अतीत के मान-अपमान को भूलकर संकीर्ण मानसिकता से निकलकर ऊपर उठेगा। जातिगत भेदभाव गुजरे जमाने की चीज हो जाएगी। लेकिन अब देखकर लगता है कि सामाजिक समरसता अब भी एक सपना है और शायद तब तक सपना ही रहेगा जब तक कोई दलित अपनी दलित और कोई उच्च अपनी उच्च मानसिकता से बाहर नहीं आएगा। -***राजीव चौधरी***

ऐतिहासिक प्रेरक प्रसंग

जादू वह जो सिर चढ़कर बोले

कहते हैं सच्चे योगियों व वास्तविक धार्मिक महात्माओं का जीवन चमत्कारिक होता है। उनके द्वारा कथित शब्द जादू का सा प्रभाव सुनने वाले के ऊपर पड़ता है। सुनने वाले का अपना जीवन जहां प्रभावित होकर उन्नत व सुखी होता है वहां वह समाज को भी उन्नत करता है। अज्ञानी जन उसे चमत्कार कहें या जादू यह उनकी मानसिकता का पहलू है।

जिस घटना का मैं उल्लेख करने जा रहा हूं वह एक ऐसे महात्मा से सम्बन्धित है जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन गुरुकुलीय शिक्षा को समर्पित किया हुआ था, वह महात्मा और कोई नहीं स्वनामधन्य महात्मा मुन्शी राम जो कालान्तर में स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए। यह उनके जीवन की ऐतिहासिक घटना आर्य समाज मन्दिर चावड़ी बाजार की है। कन्या गुरुकुल के लिए महात्मा मुन्शी राम जी ने दिल्ली के सेठ रग्घुमल लोहिया द्वारा एक लाख रु. दान देने की घोषणा की। इसके पश्चात् सन् 1923 में दिवाली के दिन दरियागंज की एक कोठी में कन्या गुरुकुल का उद्घाटन किया गया। उसकी आचार्या तपस्विनी कुमारी विद्यावती सेठ, बी.ए. ने बीस वर्षों तक कठोर तप व लगन से कन्या गुरुकुल का संचालन किया। गुरुकुल को दान देने का प्रेरणा पूर्ण प्रसंग सेठ रघुमल के शब्दों में उद्धृत कर रहा हूं-

''यह तो आपने देखा ही है कि दिल्ली में मेरी दुकान चावड़ी बाज़ार में है। आर्य समाज मन्दिर उसके बहुत समीप है। मैं कभी-कभी आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों में अपने मित्रों के साथ चला जाया करता था। एक दिन सुना कि गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक महात्मा मुन्शीराम जी का उपदेश होगा। मैं साप्ताहिक सत्संग में चला गया। महात्मा जी ने सदाचार की व्याख्या करते हुए इस बात पर बहुत खेद प्रकट किया कि ''जिस बाज़ार में आर्य समाज का मन्दिर है, उसी में वेश्याओं का अड्डा है। शहर भर की वैश्याएं चावड़ी बाज़ार में ही रहती हैं, जिस कारण यह बाजार दुराचार का गढ़ बना हुआ है। जिन चौबारों में वैश्याएं रहती हैं, वे सब व्यापारियों की जायदाद के हिस्से हैं। यह निश्चय है कि पाप की कमाई कभी सफल नहीं हो सकती। जो व्यापारी वैश्याओं को मकान किराए पर देकर धन कमाते हैं, उनका अपना जीवन तो बिगड़ता ही है, उनकी सन्तानें भी अच्छे चरित्रवाली नहीं रह सकतीं और चरित्रहीन के पास सम्पत्ति कैसे बच सकती है। मैं देखता हूं यहां कई व्यापारी ऐसे बैठे हैं, जिनकी जायदाद में वैश्याएं बसी हैं। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूं कि वे अपनी जायदाद में से वैश्याओं को निकाल दें तो उनकी आय बढ़ेगी, घटेगी नहीं। मेरे कहने से वे यह परीक्षा करके देख लें।''

सेठ जी ने कहा कि ''मेरे मन पर महात्मा जी के कथन का गहरा असर हुआ। मैं समाज से सीधा उठकर दुकान पर गया और न केवल अपनी जायदाद में रहने वाली वैश्याओं को एक महीने का नोटिस दे दिया अपितु दुकान की बही में भी लिख दिया कि इस पीढ़ी की कोई जायदाद भविष्य में भी कभी किसी वैश्या को किराये पर नहीं दी जाए। मेरे इस कार्य का मुझ पर, मेरी दुकान पर और सम्पूर्ण व्यापार पर अद्भुत असर पड़ा।''

- शेष पृष्ठ 8 पर

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

संरक्षण' 'याज्ञिक परिवार' व 'ग्लोबल वार्मिंग', 'संस्कारों का महत्त्व' व 'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है' इन विषयों पर बच्चों ने आकर्षक व सुन्दर चित्र बनाए।

पांचों वर्गों में दो-दो प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर निर्णायक मंडल में सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री बादल जी, श्रीमती सरला बंसल जी ने अपना निष्पक्ष निर्णय दिया। श्री बादल जी ने बच्चों को महर्षि दयानन्द, लाला लाजपत राय व शहीद पं. लेखराम के सुन्दर चित्र बनाकर दिखाए। सभी प्रतियोगिओं को सुन्दर प्रमाण पत्र व कॉमिक्स और विजेताओं को सुन्दर मैडल देकर सम्मानित किया गया। सभी के लिए जलपान की व्यवस्था की गई। – ***संयोजिका***

चित्रकला प्रतियोगिता के निर्णायक श्री बादल जी एवं विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती किरण तलवार के साथ श्रीमती तृप्ता शर्मा विभिन्न वर्गों द्वारा बनाए गए चित्रों के साथ।

चित्रकला प्रतियोगिता में विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई में से पुरस्कृत चित्रकारियां

वर्ग-1

प्रथम: **ध्वनि**, *महर्षि द. प. स्कूल, न्यू मोती नगर,*
अराध्या राजपूत, *एस.एम.आर्य प.स्कूल, पं.बाग*
द्वितीय: **अभिलाषा**, *लालीबाई बाल वि. गोविन्द भवन*
तान्या, *रतनचन्द आर्य प.स्कूल, सरोजनी नगर*
तृतीय: **प्राची**, *आर्य पब्लिक स्कूल, श्री निवास पुरी*
राशि, *दयानन्द माडल स्कूल विवेक विहार*
चतुर्थ: **मेरियट**, *महर्षि दयानन्द प. स्कूल, शादीखामपुर*

वर्ग-2

प्रथम: **रेहान**, *महर्षि द.प.स्कूल, शादीखामपुर*
अमर, *महर्षि द. प. स्कूल, शादीखामपुर*
द्वितीय: **ऋषभ**, *महर्षि द.प.स्कूल, शादीखामपुर*
मोना सिंह, *एस.एम.आर्य प.स्कूल पं.बाग*
तृतीय: **यशस्वी**, *एस.एम.आर्य प.स्कूल पं.बाग*
नसरीन, *आर्य शिशु शाला, ग्रेटर कैलाश-1*
चतुर्थ: **काजल**, *आर्य पब्लिक स्कूल, श्री निवासपुरी*
प्रियांशी, *आर्य शिशु शाला, ग्रेटर कैलाश-1*

वर्ग-3

प्रथम: **महक**, *एस.एम. आर्य प.स्कूल पं. बाग*
पारुल, *बिरला आ.क.सी.सै.स्कूल, कमला नगर*
द्वितीय: **हार्दिक**, *आर्यशिशु शाला ग्रेटर कैलाश-1*
सान्या, *रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल*

तृतीय : **अनिकेत**, *एस.एम.आर्य प. स्कूल पंजाबी बाग*
करीना, *आर्य शिशु शाला ग्रेटर कैलाश-1*
चतुर्थ: **आयान**, *महर्षि द.प.स्कूल,शादीखामपुर*
लारा, *रघुमल आर्य सी.सै. स्कूल राजा बाजार*

वर्ग-4

प्रथम : **रोहन**, *दयानन्द माडल सै. स्कूल, विवेक विहार*
गौरी, *रतनचन्द आर्य प. स्कूल, सरोजनी नगर*

द्वितीय : **सान्या**, *रघुमल आर्य सी. सै. स्कूल राजा बाजार*
सूजल, *दयानन्द माडल सै. स्कूल, विवेक विहार*

तृतीय : **शशांक**, *रतनचन्द आर्य प. स्कूल, सरोजनी नगर*
रिंकी, *आर्य कन्या सी.सै. स्कूल, चावड़ी बाजार*

चतुर्थ : **काजोल**, *बिरला आर्य गर्ल्स सी.सै. स्कूल, कमला नगर*, **खुशी**, *दयानन्द माडल स्कूल, विवेक विहार*

वर्ग-5

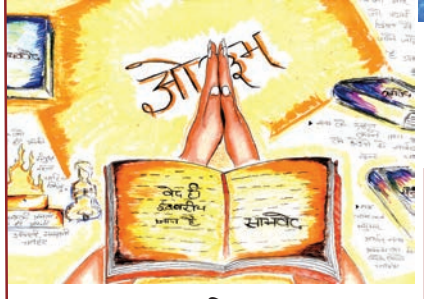

प्रथम : विक्रम
एस.एम. आर्य प.स्कूल, पंजाबी बाग
प्रथम : दिव्यांशु
एस.एम. आर्य प.स्कूल, पंजाबी बाग

द्वितीय : पुष्पा
एस.एम. आर्य प.स्कूल, पंजाबी बाग
द्वितीय : रीया सेन
रघुमल आर्य सी.सै. स्कूल राजा बाजार

तृतीय : अंशिका
बिरला आर्य क. सी.सै. स्कूल, कमला नगर
तृतीय : कोमल रानी
रघुमल आ.क.सी.सै. स्कूल, राजा बाजार

चतुर्थ : खुशबू
एस.एम. आर्य प.स्कूल, पंजाबी बाग
चतुर्थ : अक्षित
दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर

आर्य विद्या परिषद दिल्ली के अन्तर्गत आगामी प्रतियोगिताएं

एकांकी प्रतियोगिता : 2 अगस्त 2016 प्रातः 9:00 बजे
महर्षि दयानंद प. स्कूल न्यू मोती नगर, नई दिल्ली-110015

नुक्कड़ नाटक : 9 अगस्त 2016 प्रातः 9:00 बजे
दयानन्द आदर्श विद्यालय, आर्य समाज तिलक नगर, नई दिल्ली-110018

भाषण प्रतियोगिता : 24 अगस्त 2016 प्रातः 9 बजे
लालीबाई बाल विद्यालय, दयानन्द वाटिका, राम बाग, नई दिल्ली-110007

समूह गान : 30 अगस्त प्रातः 9 बजे
बिड़ला आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, दिल्ली-7

आप सबसे निवेदन है कि आप अपने एवं अपने विद्यालयों के बच्चों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नं. 9810061263, 9868233795 पर सम्पर्क करें। – **प्रस्तौता**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन काठमाण्डू (नेपाल)

20-21-22 अक्टूबर 2016

सम्माननीय आर्य बन्धुओं!

सादर नमस्ते। आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 20, 21 तथा 22 अक्टूबर 2016 को नेपाल की राजधानी काठमांडू में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अनेक देशों के प्रतिनिधि भी नेपाल पहुंचेंगे। भारत वर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु भारी संख्या में आर्यजनों के पहुंचने की सम्भावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही आर्य प्रतिनिधि सभा, नेपाल द्वारा प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था की जायेगी।

जैसाकि आप सभी जानते हैं कि नेपाल एक विकसित सम्पन्न देश नहीं है। पिछले भयानक भूकम्प ने वहां की स्थिति और भी खराब कर दी है। इसके बाद भी नेपाल की आर्य प्रतिनिधि सभा ने काठमांडू में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित करने का जो उत्साह दिखलाया है वह आप सबके सहयोग से ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकेगा।

अनेकों आर्यजन इस अवसर पर नेपाल के अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों का भी भ्रमण करना चाहते हैं इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए नेपाल के रमणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है। दोनों यात्राओं की जानकारी निम्न प्रकार है-

यात्रा नं. 1 (A)
(केवल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हेतु)

हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान (4 रात 5 दिन) **19 से 23 अक्टूबर 2016 तक**
दिल्ली से 19.10.2016 को वापसी काठमांडू से 23.10.2016 को
यात्रा व्यय रु. 35,000/- प्रति व्यक्ति 5 सितारा होटल के लिये
रु. 27,000/- प्रति व्यक्ति 3 सितारा होटल के लिये
रु. 22,000/- प्रति व्यक्ति अतिथि भवनों के लिये

यात्रा व्यय की सम्पूर्ण राशि एक ही बार में **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बैंक ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर तत्काल भेजनी होगी:

श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

नोट : काठमांडू का भ्रमण कार्यक्रम 19 अथवा 23 अक्टूबर को रखा जायेगा।

यात्रा नं. 1 (B)

वाराणसी तथा गोरखपुर से वातानुकूलित 2×2 बसों द्वारा प्रस्थान (5 रात 6 दिन)
19 से 24 अक्टूबर 2016 काठमांडू से वापसी 23 की रात को
यात्रा व्यय रु. 7500/- प्रति यात्री

इस राशि में 6 दिन का वातानुकूलित बस का भाड़ा, 4 दिन का होटल का किराया, 4 दिन की भोजन व्यवस्था तथा काठमांडू घूमने का बस खर्चा शामिल है। इस यात्रा के लिये रु. 7500/- का बैंक ड्राफ्ट **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर यात्रा नं. 1 (A) में दिये गए पते पर तत्काल भेजना होगा।

वाराणसी तथा गोरखपुर से जाने वाली बसों के सम्बन्ध में विशेष सूचना

(1) जो लोग वाराणसी तथा गोरखपुर तक ट्रेन से पहुंचकर वहां से नेपाल जाने की सुविधा चाहते हैं उन यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बड़ी कोशिशों के बाद गोरखपुर तथा वाराणसी से ए.सी. बसों की व्यवस्था हो सकी है जिससे कि यात्री नेपाल तक की यात्रा के अनेक कष्टों और असुविओं से बच सकें।
(2) सभी बसें वाराणसी तथा गोरखपुर रेलवे स्टेशनों से प्रस्थान करेंगी। प्रत्येक बस में केवल 40 यात्री ही जा सकेंगे।
(3) जितने यात्री 18 अक्टूबर की रात को 9.00 बजे तक वाराणसी तथा गोरखपुर पहुंच जायेंगे उन्हें 18 की रात को 11.00 बजे 40-40 के ग्रुप में काठमांडू के लिये रवाना कर दिया जायेगा। उसके बाद जितने भी यात्री पहुंचेंगे उन्हें 19 अक्टूबर की सुबह 8.00 बजे 40-40 के ग्रुप में भेजा जायेगा।
(4) काठमांडू पहुंचने में वाराणसी से लगभग 18 घन्टे का तथा गोरखपुर से लगभग 14 घन्टे का समय लगता है। नेपाल बॉर्डर रात को 10 बजे से सुबह 5.30 बजे तक बन्द रहता है इसलिए बसों को बॉर्डर पर रात को 10 बजे से पहले या सुबह 5:30 बजे के बाद पहुंचना ठीक रहता है ताकि वहां समय व्यर्थ बरबाद न हो।
(5) गोरखुपर से काठमांडू तक के रास्ते में तथा लौटते समय नाश्ते तथा भोजन का खर्चा यात्री को स्वयं करना होगा।
(6) काठमांडू में 20, 21, 22 तथा 23 अक्टूबर को चार दिन की भोजन व्यवस्था एवं 19 से 22 अक्टूबर तक की होटल व्यवस्था तथा भ्रमण-व्यवस्था सभा की ओर से की जायेगी। 23 अक्टूबर को काठमांडू भ्रमण के पश्चात् बस भारत के लिये रवाना होगी।
(7) नेपाल जाते समय यात्री के पास पासपोर्ट अथवा वोटर कार्ड होना जरूरी है।
नोट : उक्त पैकेज ता. 18 अक्टूबर की सुबह से 19 अक्टूबर की सुबह तक पहुंचने वाले यात्रियों के लिये ही उपलब्ध रहेगा। जिन्हें 40 के ग्रुप में बुकिंग करानी हो वे ग्रुप बुकिंग करवा सकते हैं।

आवेदन पत्र पृष्ठ 7 पर प्रकाशित किया गया है।

यात्रा नं. 2 (A) : नेपाल सम्मेलन तथा पोखरा यात्रा

हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान (7 रात 8 दिन)
दिल्ली से 17.10.16 को वापसी काठमांडू से 24.10.16 को
दिल्ली से 18.10.16 को वापसी काठमांडू से 25.10.16 को
दिल्ली से 19.10.16 को वापसी काठमांडू से 26.10.16 को

एक ही दिन में ज्यादा हवाई टिकटें उपलब्ध न होने के कारण तीन अलग-अलग तारीखों में थोड़ी-थोड़ी टिकटें खरीदी जा सकी हैं। सम्मेलन से पहले या बाद में ए.सी. बसों द्वारा पोखरा की यात्रा की जायेगी। पोखरा प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर बहुत ही रमणीय स्थान है। यहां पर दो रात्रि का विश्राम रखा गया है। बीच रास्ते में अन्य दर्शनीय स्थलों को भी देखने का अवसर मिलेगा। यात्रा नं. 2 के अन्तर्गत काठमांडू में एक दिन का अतिरिक्त विश्राम भी शामिल है जिससे कि सम्पूर्ण यात्रा आरामदायक रहे।

यात्रा व्यय रु. 46,500/- प्रति व्यक्ति 5 सितारा होटल के लिये
रु. 36,500/- प्रति व्यक्ति 3 सितारा होटल के लिये

यात्रा नं 2 (A) के लिये सम्पूर्ण राशि का बैंक ड्राफ्ट **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर यात्रा नं. 1 (A) में दिये गए पते पर तत्काल भेजना होगा।

यात्रा नं. 2 (B) : नेपाल सम्मेलन तथा पोखरा यात्रा

गोरखपुर तथा वाराणसी से वातानुकूलित 2×2 बसों द्वारा प्रस्थान (7 रात 8 दिन)
19 से 26 अक्टूबर 2016 तक पोखरा से वापसी 25 की रात को
यात्रा व्यय रु.11,500/- प्रति यात्री

इस राशि में 8 दिन का वातानुकूलित बस का भाड़ा, 6 दिन का होटल का किराया, 6 दिन की भोजन व्यवस्था तथा काठमांडू और पोखरा घूमने का बस खर्चा शामिल है। इस बस यात्रा के लिये रु. 11,500/- का बैंक ड्राफ्ट **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर यात्रा नं. 1 (A) में दिये गए पते पर तत्काल भेजना होगा।

वाराणसी तथा गोरखपुर से जाने वाली बसों के सम्बन्ध में विशेष सूचना

यात्रा नं. 1 (B) में दी गई बस यात्रा वाली सूचनाएं क्रमांक 1 से 5 तथा 7 इस यात्रा में भी लागू होंगी। नेपाल में 20, 21, 22, 23, 24 तथा 25 अक्टूबर को 6 दिन की भोजन व्यवस्था एवं 19 से 24 तक 6 दिन की होटल की व्यवस्था तथा सारी भ्रमण व्यवस्था सभा की ओर से की जायेगी। काठमांडू तथा पोखरा घूमने के पश्चात् 25 अक्टूबर को बस भारत के लिये वापस रवाना होगी।

यात्रा नं. 3

(काठमांडू तक अपने आप पहुंचने वालों के लिये विशेष सुविधा)

अपने आप काठमांडू पहुंचने वालों के लिये काठमांडू में 4 दिन साधारण होटल में ठहरने की तथा 4 दिन की भोजन व्यवस्था सभा द्वारा की जा रही है। जो भी यात्री इस सुविधा को लेना चाहें वे तत्काल 4,000/- का बैंक ड्राफ्ट **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर यात्रा नं. 1 (A) में दिये गए पते पर तत्काल भेजने का कष्ट करें। **नोट :** इस पैकेज में अन्य कोई सुविधा नहीं दी जा सकेगी।

कुछ आवश्यक सूचनाएं

(1) **ग्रुप बुकिंग के कारण हवाई जहाज की टिकटें बहुत ही कम संख्या में उपलब्ध हो सकी हैं अत: आप शीघ्रातिशीघ्र अपनी बुकिंग करा लें जिससे कि आपको निराश न होना पड़े।**
(2) नेपाल यात्रा में बीमा की कोई आवश्यकता नहीं है परन्तु यदि आप जरूरी समझें तो स्वयं करवा लें। दिये हुए पैकेज में बीमा शामिल नहीं है।
(3) **जो लोग बिना किसी पूर्व सूचना के सीधे पहुंचेंगे उनके ठहरने व खाने की जिम्मेदारी सभा की नहीं होगी। नेपाल सम्मेलन में भाग लेने के लिये उन्हें रु. 1500/- की सहयोग राशि नेपाल में सार्वदेशिक सभा को देनी अनिवार्य होगी। सम्मेलन में तीनों दिन भोजन व्यवस्था उपलब्ध रहेगी।**
(4) सभी यात्रियों को यात्रा की व्यय राशि के ड्राफ्ट के साथ पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ अथवा वोटर कार्ड अथवा आधार कार्ड की जेरोक्स कापी अवश्य भेजनी है। एअर लाइन की टिकिट के लिये इसकी आवश्यकता रहती है।
(5) संलग्न आवेदन पत्र पर सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों की अनुमति/स्वीकृति आवश्यक है।
(6) नेपाल के लिये वीजा नहीं चाहिये किन्तु एअरपोर्ट पर पासपोर्ट अथवा वोटर कार्ड अथवा आधार कार्ड में से किसी एक का लाना अत्यावश्यक है।
(7) सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 5 सदस्यों की एक समिति गठित की गई है जिसके संयोजक श्री सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। अन्य सदस्य श्री प्रकाश जी आर्य, मंत्री, सार्वदेशिक सभा, श्री अरुण प्रकाश जी वर्मा, दिल्ली, श्री एस.पी. सिंह जी, दिल्ली तथा श्री शिव कुमार जी मदान, दिल्ली हैं।

यात्रा कैन्सिल कराये जाने पर कैन्सीलेशन चार्जेज निम्न प्रकार लागू होंगे:

1. प्रस्थान की तारीख से 30 दिन पूर्व हवाई यात्रा कैन्सिल कराने पर रु. 7500/- की कटौती की जायेगी। 2. प्रस्थान की तारीख से 16 दिन पूर्व हवाई यात्रा कैन्सिल कराने पर 75% की कटौती की जायेगी। 3. प्रस्थान की तारीख से 1 दिन से लेकर 15 दिन पहले तक यात्रा कैन्सिल कराने पर 100% कटौती की जायेगी।

कृपया उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु आप मुझसे तथा निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं:

1. श्री अरुण प्रकाश वर्मा (9810086759) 2. श्री एस.पी.सिंह (9540040324)
3. श्री शिव कुमार मदान (9310474979)

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद, आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

(प्रकाश आर्य)
मन्त्री, सार्वदेशिक आ. प्र. सभा मो. 9826655117

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Lord the Child,The Devotee the Mother

A child never envies others. The crooked sin of the world never touches him. It is only when he grows that the worldly matters enter into his mind. But the Supreme Lord is eternally simple and pure. The child is sinless out of ignorance. The Lord is all-knowing and all-powerful, yet he has no sin in him. Even while spreading across the impure and unclean places, He is eternally pure. He imparts noble advice even residing in the heart of the devil. He is all-pervading and all-pure.

O friends, pray to the Lord accepting Him as an innocent child. Love Him most. Make Him cheerful as a mother does to her child. Converse with Him in the language of a child. Laugh and dance to make Him happy and contented. Open your motherly heart for the Joyful child. A mother does not serve the child with the expectation of receiving anything in return. Her sole desire is only to provide for the pleasure of the child. There is no self- interest in her gift. O friends, you have to be of excellent nature to make happy the child in form of the Lord. Be blessed devotees leading a life of purity and simplicity. Thus, be an affectionate mother for the pleasure of that extraordinary child.

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत।

शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः।। (Sv.1098)

Tam vah sakhayo madaya punanamabhi gayata.

sisum na havyaih svadayanta gurtibhih..

To the Devotees-I

"May you, O devotees, invoke the Lord and offer to Him spiritual devotion, free from blemish and purify your heart. May you establish this protector of household, at the sacred altar of worship and along with your offerings surrender to Him with reverence."

"O devotees, seekers of true knowledge, may you possess in large maasures intellectual foresights for the sake of good feelings, for selfless service, for your strength, for your potentialities, for your smartness, for your well-being, for all types of your activities and for your mental powers".

आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम्।

इडस्पदे नमसा रातहव्यं सपर्यता यजतं पस्त्यानाम्।। (Sv.63)

A juhota havisa marjayadhavam ni hotaram grhapatim dadhidvam.

idaspade namasa ratahavyam saparyata yajatam pastyanam..

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्।

प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे।। (Sv.462)

Pra vo mahe matayo yantu visnave marutvate girija evayamarut.

pra sardhaya pra yajyave sukhadaye tavase bhandadistaye dhunivrataya savase..

To the Devotees-II

"Though unequalled in power to combat, the brave devotee is sure to subdue his adversaries, how-so-ever equipped by their own forces in case his close friend is the very young respendent Lord."

"Like the household fire, devotees seek the glory of the Lord even from afar and enshrine it in their innermost chamber of enlightenment. The glory of our Lord is full of splendour, all-illuminating and worthy to be honoured in every heart."

अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः।

येषामिन्द्रो युवा सखा।। (Sv.1340)

Ayuddha id yudha vrtam sura ajati satvabhin.

yesam indro yuva sakha..

तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित्।

दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः।। (Sv.1374)

Tamagnimaste vasavo nyrnvant supraticaksam avase kutascit.

daksayyo yo dama asa nityah..

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ –9

गतांक से आगे....

सन्धिः – दो ध्वनियों (वर्णो) के परस्पर मेल को सन्धि कहते हैं। अर्थात् जब दो शब्द मिलते हैं तो प्रथम शब्द की अन्तिम ध्वनि (वर्ण) तथा मिलने वाले शब्द की प्रथम ध्वनि के मेल से जो विकार होता है उसे सन्धि कहते हैं। या ध्वनियों के मेल में स्वर के साथ स्वर (राम+अवतार), स्वर के साथ व्यंजन (आ+छादन), व्यंजन के साथ व्यंजन (जगत्+नाथ), व्यंजन के साथ स्वर (जगत्+ईश), विसर्ग के साथ स्वर (मन:अनुकूल) तथा विसर्ग के साथ व्यंजन (मन:+हर), का मेल हो सकता है। प्रकारः सन्धि तीन प्रकार की होती है–

1. स्वर सन्धि 2. व्यंजन सन्धि 3. विसर्ग सन्धि

स्वर सन्धिः दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर–संधि कहते हैं। जैसे – विद्या+आलय = विद्यालय। स्वर–संधि पाँच प्रकार की होती हैं – दीर्घ संधि
गुण संधि वृद्धि संधि यण संधि अयादि संधि

दीर्घ संधि – सूत्र–**अकः सवर्णे दीर्घः** अर्थात् अक् प्रत्याहार के बाद उसका सवर्ण आये तो दोनों मिलकर दीर्घ बन जाते हैं। ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई और ऊ हो जाते हैं। जैसे (क) अ/आ+अ/आ = आ

अ+अ = आ–> धर्म+अर्थ = धर्मार्थ/ अ+आ=आ–> हिम+आलय=हिमालय/अ+आ =आ–> पुस्तक+आलय = पुस्तकालय आ+अ=आ–> विद्या+अर्थी=विद्यार्थी/ आ/आ=आ–> विद्या+आलय=विद्यालय

(ख) इ और ई की संधि

इ+इ=ई– रवि+इंद्र=रवींद्रः मुनि+इंद्र=मुनींद्र
इ+ ई=ई– गिरि+ईश=गिरीशः मुनि+ईश=मुनीश
ई+इ=ई– मही+इंद्र=महींद्रः नारी+इंदु=नारींदु
ई+ई=ई– नदी+ईश=नदीशः मही+ईश=महीश .

(ग) उ और ऊ की संधि

उ+उ=ऊ–भानु+उदय=भानूदय; विधु+उदय=विधूदय
उ+ऊ=ऊ–लघु+ऊर्मि=लघूर्मि; सिधु+ऊर्मि=सिंधूर्मि
ऊ+उ=ऊ–वधू+उत्सव=वधूत्सव;
वधू+उल्लेख= वधूल्लेख
ऊ+ऊ=ऊ–भू+ऊधर्व=भूर्ध्व; वधू+ऊर्जा=वधूर्जा

गुण संधि – इसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए; उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण–संधि कहते हैं। जैसे– (क) अ+इ=ए; नर+इंद्र=नरेंद्र
अ+ई=ए; य नर. ईश= नरेश आ+ इ=ए; महा+इंद्र=महेंद्र
आ+ई=ए; महा+ईश = महेश

(ख) अ+उ=ओ; ज्ञान+उपदेश=ज्ञानोपदेश;
आ+उ=ओ महा+उत्सव = महोत्सव
अ+ऊ=ओ जल+ऊर्मि=जलोर्मि;
आ+ऊ=ओ महा+ऊर्मि=महोर्मि।
(ग) अ+ऋ=अर् देव+ऋषि=देवर्षि
(घ) आ+ऋ=अर् महा+ऋषि=महर्षि

वृद्धि संधि – अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे– (क) अ+ए=ऐ; एक+एक=एकैक;
अ+ऐ=ऐ मत+ऐक्य=मतैक्य आ+ए=ऐ; सदा+एव=सदैव
आ+ऐ=ऐ; महा+ऐश्वर्य=महैश्वर्य
(ख) अ+ओ=औ वन+औषधि=वनौषधि;
आ+ओ=औ महा+औषधि=महौषधि;
अ+औ=औ परम+औषध=परमौषध;
आ+औ=औ महा+औषध=महौषध

यण संधि – (क) इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है। (ख) उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है। (ग) 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र' हो जाता है। इन्हें यण–संधि कहते हैं।

इ+अ=य् +अ; य यदि+अपि=यद्यपि
ई+आ=य्+आ; इति+आदि=इत्यादि।
ई+अ=य्+अ; नदी+अर्पण=नद्यर्पण
ई+आ=य्+आ; देवी+आगमन=देव्यागमन
(घ) उ+अ=व्+अ; अनु+अय=अन्वय
उ+आ=व्+आ; सु+आगत=स्वागत
उ+ए=व्+ए; अनु+एषण=अन्वेषण
ऋ+अ=र्+आ; पितृ+आज्ञा=पित्राज्ञा

अयादि संधि – ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

(क) ए+अ=अय्+अ; ने+अन=नयन
(ख) ऐ+अ=आय्+अ; गै+अक=गायक
(ग) ओ+अ=अव्+अ; पो+अन=पवन
(घ) औ+अ=आव्+अ; पौ+अक=पावक
औ+इ=आव्+इ; नौ+इक=नाविक

व्यंजन संधि – व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे–शरत्+चंद्र=शरच्चंद्र। उज्ज्वल

(क) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्,र्, ल, व्, ह या किसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को ड् और प् को ब् हो जाता है। जैसे – क्+ग= ग्ग दिक्+गज=दिग्गज। क्+ई=गी वाक+ईश=वागीश
च्+अ=ज् अच्+अंत=अजंत
ट्+आ=डा षट्+आनन=षडानन
प+ज+ब्ज अप्+ज=अब्ज

(ख) यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे– क्+म=ङ् वाक+मय =वाङ्मय च्+न=ञ् अच्+नाश=अञ्नाश ट्+म=ण् षट्+मास=षण्मास त्+न्=न् उत्+नयन=उन्नयन प्+म्=म् अप्+य=अम्मय

(ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे–त्+भ=द्भ सत्+भावना=सद्भावना त्+ई=दी जगत्+ईश=जगदीश त्+भ=द्भ भगवत्+भक्ति=भगवद्भक्ति त्+र=द्र तत्+रूप=तद्रूप त्+ध=द्ध सत्+धर्म=सद्धर्म

(घ) त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर ज् ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है। जैसे – त्+च=च्च उत्+चारण=उच्चारण त्+ज=ज्ज सत्+जन=सज्जन त्+झ=ज्झ उत्+झटिका=उज्झटिका त्+ट=ट्ट तत्+टीका=तट्टीका त्+ड=ड्ड उत्+डयन=उड्डयन त्+ल=ल्ल उत्+लास=उल्लास

(ङ) त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ् बन जाता है। जैसे –

त्+श=च्छ उत्+श्वास=उच्छ्वास त्+श=च्छ उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट त्+श=च्छ सत्+शास्त्र=सच्छास्त्र

(च) त् का मेल यदि ह् से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है। जैसे–त्+ह=द्ध उत्+हार=उद्धार त्+ह=उत्+हरण= उद्धरण त्+ह=द्ध तत्+हित=तद्धित

क्रमशः

– आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली

श्रावणी एवं वेद प्रचार समारोह

18 अगस्त से 25 अगस्त, 2016
प्रवचन : स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक
भजनोपदेशक : श्रीमती गरिमा शास्त्री
भजन-प्रवचन : सायं 7 से 9 बजे
भाषण प्रतियोगिता : 25 अगस्त, 2016
विषय:आदर्श महापुरुष योगिराज श्रीकृष्ण
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

- दयानन्द यादव,मन्त्री

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज नरेला, दिल्ली
प्रधान : श्री ब्रह्मव्रत कौशिक
मन्त्री : श्री सत्येन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष : मा. दिनेश आर्य

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली
प्रधान : श्री अशोक सहगल
मन्त्री : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा
कोषाध्यक्ष : श्री सतीश कुमार

आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली
प्रधान : श्री यशपाल शर्मा
मन्त्री : श्री हरीश खुराना
कोषाध्यक्ष : श्री विजय बजाज

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद
प्रधान : श्री सहदेव 'बेधड़क'
मन्त्री : डॉ. कैलाश 'कर्मठ'
कोषाध्यक्ष : श्री नरेशदत्त आर्य

वेद शतक महायज्ञ एवं श्रावणी उपाकर्म महोत्सव

आर्य समाज मयूर विहार-1 पॉकेट 4 दिल्ली में वेद शतक महायज्ञ एवं श्रावणी उपाकर्म का आयोजन किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत चतुर्वेद शतक यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी होंगे तथा उद्बोधन डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी करेंगे। समय दोपहर 12.45 से 1 बजे तक।

- अमीर चन्द्र रखेजा, मन्त्री

पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ की पूर्णाहुती ''वर्षाप्रारम्भ''

आर्य समाज संभाजीनगर (औरंगाबाद) की ओर से मराठवाडा क्षेत्र के अकाल निवारणार्थ 27 जून से 3 जुलाई 2016 तक 'पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ' (वैज्ञानिक प्रयोग)पूज्य ज्वाला दास महाराज मठ डेरा लक्ष्मण चावड़ी कैलास नगर में किया गया। इन सात दिनों में 1500 यजमानों ने भाग लिया। यज्ञ में 74 प्रकार की वनौषधीय हवन सामग्री का प्रयोग किया गया। यज्ञ ब्रह्मा डॉ. कमल नारायण आर्य एवं पुरोहित पं. शिव कुमार शास्त्री थे। पूर्णाहूती के समय ही वर्षा आरम्भ हुई एवं 5 जुलाई तक सम्पूर्ण मराठवाडा तक वर्षा हुई। **-दयाराम रा. बसैये, मंत्री**

खेद प्रकाश : आर्य सन्देश के पिछले अंक में अंक संख्या 37 के स्थान पर अंक 3 प्रकाशित हो गया है जिसके लिए हमें खेद है। - *सम्पादक*

पृष्ठ 5 का शेष **आवेदन प्रत्र**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2016 हेतु आवेदन - पत्र

श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र आर्य
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
मो. 9824072509

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2016 में भाग लेने जाना चाहता हूं/चाहती हूं। इस सम्बन्ध में आपके द्वारा प्रेषित जानकारी को मैंने अच्छी तरह पढ़ लिया है तथा उसमें दी गई सभी बातें मुझे स्वीकार हैं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है:

नाम :.....पिता/पति का नाम :.....
आयु : ..... जन्म तिथि : .....
व्यवसाय : .....स्थाई पता : .....
.....
..... पिन कोड :.....
दूरभाष .....मोबाईल : .....
ई.मेल :.....
मैं आर्य समाज .....का/की सदस्य हूं।

यात्रा नं. 1 (A) तथा यात्रा नं. 1 (B)

मैं यात्रा नं. 1 (**A**)/नं. (**B**) में शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि रु...../- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। साथ में पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ/वोटर कार्ड/आधार कार्ड की जैरोक्स भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. 2 (A) तथा यात्रा नं. 2 (B)

मैं यात्रा नं 2 **(A)**/ नं. 2 **(B)** में शामिल होना चाहता/चाहती हूं। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि रु. ...../-का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं। साथ में पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ/वोटर कार्ड/आधार कार्ड की जैरोक्स भेज रहा हूं/रही हूं। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. 3

मुझे यात्रा नं. 3 वाली सुविधा चाहिए। मैं रु. 4000/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूं/रही हूं।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

आर्य समाज की अनुमति (रबर स्टाम्प के साथ) **भवदीय/भवदीया**
दिनांक : ..... **(आवेदक के हस्ताक्षर)**

आवेदन पत्र हमारी बैवसाइट ww.thearyasamaj.org से भी डाउनलोड किए जा सकते हैं। शीघ्र आवेदन करें। स्थान सीमित हैं।

प्रेरक प्रसंग

आर्य समाज का एक विचित्र विद्वान्

महामहोपाध्याय पण्डित श्री आर्य मुनि जी अपने समय के भारत विख्यात दिग्गज विद्वान् थे। वे वेद व दर्शनों के प्रकाण्ड पण्डित थे। उच्चकोटि के कवि भी थे, परन्तु थे बहुत दुबले-पतले। ठण्ड भी अधिक अनुभव करते थे, इसी कारण रुई की जैकिट पहना करते थे। वे अपने व्याख्यानों में मायावाद की बहुत समीक्षा करते थे और पहलवानों की कहानियाँ भी प्राय: सुनाया करते थे। स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्द जी महाराज उनके जीवन की एक रोचक घटना सुनाया करते थे। एक बार व्याख्यान देते हुए आपने पहलवानों की कुछ घटनाएँ सुनाई तो सभा के बीच बैठा हुआ एक पहलवान बोल पड़ा, पण्डितजी! आप-जैसे दुबले-पतले व्यक्ति को कुश्तियों की चर्चा नहीं करनी चाहिए। आप विद्या की ही बातें करें तो शोभा देती हैं।

पण्डितजी ने कहा, ''कुश्ती भी एक विद्या है। विद्याबल के बिना इसमें भी जीत नहीं हो सकती।'' उस पहलवान ने कहा, ''इसमें विद्या का क्या काम? मल्लयुद्ध में तो बल से ही जीत मिलती है।''

पण्डित आर्यमुनि जी ने फिर कहा, ''नहीं, बिना विद्याबल के शरीरबल से जीत असम्भव है।'' पण्डितजी के इस आग्रह पर पहलवान को जोश आया और उसने कहा, ''अच्छा आप आइए और कुश्ती लड़कर दिखाइए।''

पण्डितजी ने कहा, 'आ जाइए'। आर्य समाज के लोग हैरान हो गये कि यह क्या हो गया? वैदिक व्याख्यानमाला-मल्लयुद्ध का रूप धारण कर गई। आर्यों को भी आश्चर्य हुआ कि पण्डित जी-जैसा गम्भीर दार्शनिक क्या करने जा रहा है। शरीर भी पण्डित शिव कुमार शास्त्री-जैसा तो था नहीं कि अखाड़े में चार मिनट टिक सके। सूखे हुए तो पण्डित जी थे ही। रोकने पर भी पण्डित आर्यमुनि न रुके। कपड़े उतारकर वहीं कुश्ती के लिए निकल आये।

पहलवान साहब भी निकल आये। सबको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि महामहोपाध्याय पण्डित आर्यमुनि जी ने बहुत स्वल्प समय में उस पहलवान को मल्लयुद्ध में चित्त कर दिया। वास्तविकता यह थी कि पण्डित जी को कुश्तियाँ देखने में सुरुचि थी। उन्हें मल्लयुद्ध के अनेक दाँव-पेंच आते थे। थोड़ा अभ्यास भी रहा था। सूझबूझ से ऐसा दाँव लगाया कि मोटे बालिष्ठय पहलवान को कुछ ही क्षण में गिराकर रख दिया और बड़ी शान्ति से बोले, 'देखो, बिना बुद्धि-बल के केवल शरीर-बल से कुश्ती में भी जीत नहीं मिल सकती।'

आर्य समाज का इतिहास साक्षी है कि आर्य समाज के दीवानों ने ऐसे-ऐसे कार्य किये हैं, जिनके सामने मत-पन्थों के पैगम्बरों के कल्पित चमत्कार फीके पड़ जाते हैं।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

शोक समाचार

श्री हरबंसलाल कोहली को पत्नीशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उप प्रधान एवं अखिल भारतीय शुद्धि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री हरबंसलाल कोहली जी की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी कोहली जी का दिनांक 26 जुलाई, 2016 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दयानन्द मुक्तिधाम लोधी रोड में किया गया। वे लगभग 88 वर्ष की थीं। वे कुछ समय से अस्वस्थ चल रहीं थी।

उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि यज्ञ एवं शान्ति सभा दिनांक 29 जुलाई, 2016 को सायं 4-5 बजे आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में आयोजित की जाएगी।

श्रीमती मालविका गुप्ता का निधन

आर्यसमाज जंगपुरा भोगल के प्रधान श्री जे. पी. गुप्ता जी की की पुत्रवधु एवं डॉ. अजय गुप्ता जी की धर्मपत्नी डॉ. श्रीमती मालविका गुप्ता का दिनांक 24 जुलाई, 2016 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा सनातन धर्म मन्दिर पंत नगर में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा एवं अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्रीमती विनोद झिंगन का निधन

आर्यसमाज मॉडल टाउन की वरिष्ठ सदस्या एवं स्त्री आर्यसमाज मॉडल टाउन की प्रधाना श्रीमती विनोद झींगन जी का गत दिनों निधन हो गया। उनकी स्मृति ममें शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आर्यसमाज मॉडल टाउन में सम्पन्न हुई जिसमें सभा एवं आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 25 जुलाई से रविवार 31 जुलाई, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28 जुलाई/ 29 जुलाई, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 जुलाई, 2016

नई शिक्षानीति में संस्कृत को उचित स्थान देने हेतु

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय को ईमेल/पत्र भेजें

प्रिय सदस्यों! नई शिक्षानीति 2016 की कमेटी ने संस्कृत बोलने/समझने वाले लोगों की संख्या जनगणना 2001 का हवाला देखते हुए 14000 (चौदह हजार), हिन्दी बोलने वाले लोगों की संख्या 40 प्रतिशत (अड़तालीस करोड़) पूरे देश में बताकर महत्त्वहीन माना है तथा उचित स्थान नहीं दिया। पूरे देश में केवल 3 प्रतिशत, अंग्रेजी जानने वालों की सुविधा का ध्यान रखते हुए पूरे देश पर अंग्रेजी थोप दी गयी है। अंग्रेजी माध्यम और अंग्रेजी को अनिवार्य कर दिया है। अत: यह समय व्यर्थ के चुटकुलों, आराम के संदेशों का नहीं अपितु मानव संसाधन विकास मन्त्रालय को ईमेल करने का है। कविता, कहानी 31 जुलाई के बाद जी भर के शेयर करना। फिलहाल जिसकी कृपा से रोटी, कपड़े, गाड़ी, मकान, सैर-सपाटा आदि का सतत आनन्द आप, आपके बच्चे ले रहे हैं, उसके संरक्षण एवं संवर्धन को सुनिश्चत करने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय को **nep.edu@gov.in** पर ईमेल करें। सुझाव भेजने की अन्तिम तिथि 31 जुलाई 2016 है। देश और देश की भाषाओं के प्रति वफादारी दिखाएं।

जिन सदस्यों ने संस्कृत भाषा को नई शिक्षानीति 2016 में उचित स्थान देने के लिए सुझाव ईमेल किये हैं, उन सभी का हार्दिक आभार। अब आप अपने मित्रों से ईमेल कराने का प्रयास करें। संस्कृत विरोधी लोग लोकसभा तथा राज्यसभा में सक्रिय हो चुके हैं। आप सभी से निवेदन है कि आप अपने राजनैतिक प्रतिनिधियों के सहयोग हेतु प्रयास शुरू करें। अब तक हम 5 सांसदों की ओर से सुझाव भिजवा चुके हैं तथा आगे भी प्रयास जारी है।

- डॉ. ब्रजेश गौतम, अध्यक्ष, संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली (9968812963, 9868879710) डॉ. दयालु (महासचिव)

पृष्ठ 3 का शेष

जादू वह जो सिर चढ़कर .....

इसके बाद सेठ जी ने भरे हुए गले से कहा, ''मुझे मालूम नहीं उसके पश्चात् मुझ पर धन की कहां से वृष्टि हो गई। हजारों को लाखों और लाखों को करोड़ों में बदलने में देर न लगी। इसके साथ ही मेरी स्वयं ही दान में प्रवृत्ति बढ़ गई। जितना पैसा देता हूं, उससे अधिक आता है। यह सब स्वामी दयानन्द जी और महात्मा जी की कृपा का फल है। आज मुझे सूझता नहीं कि मैं अपना रुपया कहां रखूं।'' इससे पूर्व गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ में शहीदों के स्मारक हेतु एक लाख दिया व पटौदी हाउस हेतु 60 हजार का दान दिया।

यह है एक महात्मा के शब्दों का प्रभाव इसे आप जादू कहेंगे या चमत्कार? जैसा चमत्कार स्वयं मुन्शी राम के जीवन में ऋषि दयाननद के शब्दों का हुआ वैसा ही प्रभाव सेठ रग्घुमल लोहिया के जीवन पर महात्मा मुन्शीराम के शब्दों का हुआ। इसे कहते हैं जादू जो सिर चढ़ कर बोलता है। *-प्रो. जय प्रकाश आर्य, प्रधान; आर्य समाज जवाहर नगर, पलवल*

प्रतिष्ठा में,

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए 'आर्य सन्देश' में एक नय स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** प्रारम्भ किया गया है।

यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिख भेजिए हमारा पता है- 'आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 या aryasabha@yahoo.com द्वारा ईमेल से भी भेज सकते हैं। *-सम्पादक*

स्वास्थ्य चर्चा

बाल सफेद जड़ से काले पैदा हों

पिछले अंक में आपने बालों के असमय गिरने इत्यादि के विषय में कारगर नुस्खों के बारे में पढ़ा। बालों से सम्बन्धित कुछ और कारगर नुस्खें प्रस्तुत हैं इन्हें भी आजमाकर देखें-

1. झाऊ की जड़ 100 ग्राम छाया में सुखा कर दरदरा कूट कर 500 ग्राम पानी में उबालें। 100 ग्राम पानी रह जाने पर निथार कर 100 ग्राम तिल के तेल में डालकर जलाएं। ठंडा कर घोंट कर बालों में मालिश करें।

2. डेढ़ ग्राम नीबू का तेल प्रतिदिन लगातार 40 दिन पीने से बाल जड़ से काले पैदा होंगे।

3. गोरख मुण्डी 50 ग्राम पीसकर 5 ग्राम प्रात: जल से लगातार लें।

4. त्रिलौक्य चिंतामणी रस एक-एक गोली शहद और दशमूलारिष्ट 4-4 चम्मच पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय तीन माह लगातार प्रयोग करें।

5. सप्तमृत लौह 4-4 रत्ती शहद अधिक घी कम के साथ प्रात: साय। तीन माह लगातार प्रयोग करें।

6. धात्री लौह 2-2 रत्ती शहद से भोजन के पहले फिर बाद में इस प्रकार दोनों समय लें।

7. लम्बी बीमारी के बाद यदि बाल गिर रहे हों तो बालों को प्रात: सायं सेंधा नमक पीस कर मलें या प्याज के रस की प्रात: सांय सिर में मालिश करें।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

आकर्षक नेम स्लिप्स

शिक्षार्थियों के मन में महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करने हेतु कापी व पुस्तकों पर चिपकाने के लिए। प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-

वैदिक प्रकाशन , दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह